४. सौहार्द–सौमनस्य

– *जहीर कुरैशी*

परिचय

जन्म : १९५०, गुना (म.प्र.)
परिचय : आपकी रचनाएँ, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। आपको 'इनकार्पोरेटेड सम्मान', 'गोपाल सिंह नेपाली सम्मान' प्राप्त हुए हैं।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक टुकड़ा धूप', 'लेखनी के स्वप्न', 'चाँदनी का दुख', 'भीड़ में सबसे अलग', 'पेड़ तनकर भी नहीं टूटा' (गजल संग्रह) आदि।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत दोहों में जहीर कुरैशी जी ने छोटे–बड़े के भेद मिटाने, नफरत, स्वार्थ आदि छोड़ने के लिए प्रेरित किया है। आपका मानना है कि अनेकता में एकता ही अपने देश की शान है । अतः हमें मिल–जुलकर रहना चाहिए।

कल्पना पल्लवन

'भारत की विविधता में एकता है', इसे स्पष्ट करो।

वो छोटा, मैं हूँ बड़ा, ये बातें निर्मूल,
उड़कर सिर पर बैठती, निज पैरों की धूल ।

नफरत ठंडी आग है, इसमें जलना छोड़,
टूटे दिल को प्यार से, जोड़ सके तो जोड़ ।

पौधे ने बाँटे नहीं, नाम पूछकर फूल,
हमने ही खोले बहुत, स्वारथ के इस्कूल ।

धर्म अलग, भाषा अलग, फिर भी हम सब एक,
विविध रंग करते नहीं, हमको कभी अनेक ।

जो भी करता प्यार वो, पा लेता है प्यार,
प्यार नकद का काम है, रहता नहीं उधार ।

जर्रे–जर्रे में खुदा, कण–कण में भगवान,
लेकिन 'जर्रे' को कभी, अलग न 'कण' से मान ।

इसीलिए हम प्यार की, करते साज–सम्हार,
नफरत से नफरत बढ़े, बढ़े प्यार से प्यार ।

भाँति–भाँति के फूल हैं, फल बगिया की शान,
फल बगिया लगती रही, मुझको हिंदुस्तान ।

हम सब जिसके नाम पर, लड़ते हैं हर बार,
उसने सपने में कहा, लड़ना है बेकार !

कितना अच्छा हो अगर, जलें दीप से दीप,
ये संभव तब हो सके, आएँ दीप समीप ।।

शब्द वाटिका

निर्मूल = बिना जड़ की, निरर्थक
स्वारथ = स्वार्थ
सम्हार = सँभाल, सुरक्षित
जर्रा = अत्यंत छोटा कण

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :**

(१) कृति पूर्ण करो :

१. इन बातों में अलग होकर भी हम सब एक हैं –

२. बगिया की शान –

(२) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखो :

१. दीपक = ----------
२. पुष्प = ----------
३. तिरस्कार = ----------
४. प्रेम = ----------

(३) कविता में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ियाँ लिखो ।

भाषा बिंदु पाठों में आए अव्ययों को पहचानो और उनके भेद बताकर उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

शालेय बैंड पथक के लिए आवश्यक सामग्री खरीदने हेतु अपने विद्यालय के प्राचार्य से विद्यार्थी प्रतिनिधि के नाते अनुमति माँगते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखो :

दिनांक :
प्रति,
.....
.....
विषय : .....
संदर्भ : .....
महोदय,
विषय विवेचन
.....
.....
.....
.....।

आपका/आपकी आज्ञाकारी,
.....
(विद्यार्थी प्रतिनिधि)
कक्षा : .....

IZR8VN

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन 'नफरत से नफरत बढ़ती है और स्नेह से स्नेह बढ़ता है', इस तथ्य से संबंधित अपने विचार लिखो ।